स्नातक प्रथम वर्ष

रीतिकालीन पंक्तियां एवं रचनाकार

(वस्तुनिष्ठ)

— डॉ० मुन्ना साह

1. "रावरे रूप की रीति अनूप, नयौ नयौ लागत ज्यों ज्यों निहारियै।"

— घनानन्द

2. "अति सूधौ सनेह को मारगु है, जहां नेकु सयानप बांक नहीं"

— घनानन्द

3. "लोग हैं लागि कबित्त बनावत मोहि तो मेरे कबित्त बनावत।

— घनानन्द

4. "नैन नचाय कहि मुसुकाय 'लला फिर आइयो खेलन होरी'

— पद्माकर

5. "एक पग भीतर और एक देहरी पै धरे
एक कर कज, एक कर है किवार पर"

— पद्माकर

6. "फागु की भीर, अभिरिन में गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी।"

— पद्माकर

7. "अमिय हलाहल मदभरे स्वेत स्याम रतनार
जियत मरत झुकि-झुकि परत जेहि चितवत इक बार।"

— रसलीन

8. "दिया है खुदा ने खूब खुशी करो ग्वाल कवि
खाव पियो, देब लेब, यही रह जाना है।"

— ग्वाल कवि

9. "निकट रहे आदर घटे, दूरी रहे दुख होय
सज्जन या संसार में, प्रीति करौ जनि कोय"

— सज्जन